दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB TGT & PGT
ROJGAR WITH ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
MODERN HISTORY
गांधीजी के राष्ट्रीय आंदोलन
LIVE
23-07-2024 04:00 PM

महात्मा गांधी
राष्ट्रीय आंदोलन

- असहयोग आंदोलन
- सविनय अवज्ञा आंदोलन
- भारत छोड़ो आंदोलन

महात्मा गांधी
राष्ट्रीय आंदोलन

संघर्ष-विराम-संघर्ष रणनीति

गांधी जी के स्थानीय प्रयोग

⇒ 9 जनवरी 1915 को गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस लौट आए।

⇒ इस समय प्रथम विश्वयुद्ध चल रहा था और ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों से सलाह मशवरा किए बगैर, भारत को भी अपनी तरफ से युद्धरत घोषित कर दिया। मित्र राष्ट्रों ने इसका उद्देश्य "विश्व में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करना" बताया।

⇒ गांधी जी और अन्य भारतीयों को ऐसा लगा कि यदि इन विषम परिस्थितियों में ब्रिटिश सरकार का साथ दिया जाए, तो वह खुश होकर भारत में भी उन्हीं लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने का प्रयास करेंगे, जो मित्र राष्ट्रों का घोषित लक्ष्य है।

⇒ गांधी जी ने इस युद्ध के दौरान भारतीयों से ब्रिटिश सेना में शामिल होने का आह्वान किया। इसी लिए गांधी जी को 'सेना भर्ती' करने वाला 'सार्जेंट' कहकर पुकारा गया।

⇒ गांधी जी के द्वारा दिए गए इसी अप्रतिम सहयोग से खुश होकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 'केसरे-हिन्द' की उपाधि प्रदान की।

⇒ इन युद्धकालीन परिस्थितियों में भी गांधी जी ने तीन छोटे-छोटे आंदोलनों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया।

1) चंपारण सत्याग्रह (1917)
2) अहमदाबाद मिल मजदूरों का आंदोलन (1918)
3) खेड़ा सत्याग्रह (1918)

चंपारण सत्याग्रह (1917)

⇒ चंपारण (बिहार), हिमालय के तराई क्षेत्र में स्थित था। (मुख्यालय – मोतिहारी)

⇒ यहां 'तीन कठिया प्रणाली' किसानों के शोषण का पर्याय बनी। जिसके अंतर्गत प्रत्येक किसान को अपनी भूमि के 3/20वें हिस्से पर नील की खेती करना अनिवार्य था।

⇒ कृत्रिम नील की आविष्कार होने के बाद भी किसानों को नील की खेती के लिए बाध्य किया जाता था।

⇒ चंपारण के किसान पंडित राजकुमार शुक्ल लखनऊ सम्मेलन में गांधी जी से मिलते है, और उन्हें किसानों की दुर्दशा से अवगत कराते हैं।

⇒ राजकुमार शुक्ल ने ही उन्हें चम्पारण आने का निमंत्रण दिया।

DigvijaySirGS

⇒ गांधी जी ने चम्पारण में 1917 में अपना सत्याग्रह कर वहां के किसानों को उस तिनकठिया पद्धति से मुक्ति प्रदान की।

⇒ चंपारण सत्याग्रह भारत में किया जाने वाला गांधी जी का प्रथम सत्याग्रह था।

⇒ गांधी जी की सफलता के पश्चात् रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें 'महात्मा' की उपाधि प्रदान की थी।

⇒ इस आंदोलन में उनके सहयोगी बृजकिशोर, जे.बी. कृपलानी, नरहरि पारिख, महादेव देसाई, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आदि थे।

अहमदाबाद में मजदूरों का आंदोलन (1918)

⇒ अहमदाबाद (गुजरात) में मिल-मालिक और मजदूरों के मध्य प्लेग के बोनस को लेकर संघर्ष की स्थिति थी।

⇒ मिल मालिकों ने मजदूरों को प्लेग बोनस (वेतन + बोनस) दे रखा था।

⇒ प्लेग समाप्त होने के बाद मिल मालिक बोनस को समाप्त करना चाहते थे।

⇒ मजदूरों की यह मांग थी कि चूंकि प्रथम विश्वयुद्ध की वजह से भारत में महंगाई काफी अधिक बढ़ गई है, इसलिए प्लेग बोनस को जारी रखा जाए। मिल मालिक इसके लिए राजी नहीं थे।

⇒ तब गुजरात के एक प्रसिद्ध उद्योगपति अंबालाल साराभाई की बहन अनुसुइया बेन ने गांधी जी को पत्र लिखकर मजदूरों की समस्याओं के बारे में जानकारी दी।

⇒ गांधी जी तब इस मामले को एक ट्रिब्यूनल को सौंप देने को कहा। मिल मालिक इस बात पर राजी नहीं थे।

⇒ मिल मालिक से गांधी जी ने मजदूरों को 35% बोनस देने की अपील की, परन्तु मिल मालिक 20% पर राजी थे। तब गांधी जी ने सारे मजदूरों को हड़ताल पर चले जाने को कहा और बाद में स्वयं भी अनशन प्रारंभ कर दिया।

⇒ भारत में गांधी जी द्वारा किया जाने वाला प्रथम अनशन था।

⇒ इस आंदोलन में गांधी जी के साथ श्री वल्लभ भाई पटेल, शंकरलाल बैंकर और अनुसुइया बेन थी। अंततः मिल मालिक समझौते पर राजी हो गए। इस प्रकार गांधी जी का यह आंदोलन भी सफल रहा।

Dr Vijay GS

खेड़ा सत्याग्रह (1918)

गांधी जी का प्रथम किसान सत्याग्रह।
अकाल संहिता के अनुसार, किसी साल विशेष में, सामान्य वर्ष की तुलना में किसी प्राकृतिक आपदा की वजह से यदि एक-चौथाई भी उत्पादन न हुआ हो, तो उस वर्ष विशेष में सरकार के द्वारा लगान माफ कर दिया जाना चाहिए।
1918 में खेड़ा में कमोबेश स्थिति ऐसी ही थी। भयानक अकाल की वजह से फसल बर्बाद हो गई थी, परंतु सरकार इसके बावजूद भी लगान वसूल कर रही थी, जिससे किसानों की समस्याएं काफी बढ़ गई।
गांधी जी ने इस मामले के निपटारे हेतु भी पंच बिठाने की मांग की न माने जाने पर गांधी जी ने यहां भी सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया।
इस आंदोलन में गांधी जी के साथ वल्लभ भाई पटेल, शंकर लाल बैंकर, अनुसुइया, महादेव देसाई आदि थे।
अंत में ब्रिटिश सरकार ने एक गुप्त आदेश जारी कर कहा कि लगान उन्हीं से वसूला जाए, जो देने की स्थिति में हैं। इस प्रकार गांधी जी का यह आंदोलन भी सफल हुआ।

Digvijay Sir GS

खिलाफत एवं असहयोग आंदोलन

प्रथम विश्व युद्ध (1914 – 1918)

मित्र राष्ट्र – इंग्लैण्ड
सहयोगी राष्ट्र – बेल्जियम
हॉलैण्ड

V/S

(पराजय)
धुरी राष्ट्र – जर्मनी
सहयोगी देश – तुर्की

उद्देश्य – विश्व में लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करना।
घोषणा – युद्ध में जीत जाने के पश्चात किसी भी पराजित राष्ट्र के साथ कोई अपमानजनक संधि नहीं करेगा।

⇒ तुर्की में समस्त मुस्लिम जगत का प्रधान खलीफा रहता था।
⇒ अपमानजनक शर्ते थोपी।
↓
⇒ खलीफा का अपमान (मुस्लिम)
⇒ समस्त विश्व में जहां पर मुस्लिम निवास कर रहे, अगर वहां अंग्रेजो का शासन है, तो उनके शासन के विरोध में आंदोलन हुये।
⇒ भारत – खिलाफत आंदोलन

⇒ गांधी जी और कांग्रेसियों ने भी ब्रिटिश सरकार को अपना सहयोग प्रथम विश्वयुद्ध में इस उम्मीद के साथ दिया था कि ब्रिटिश सरकार युद्धोपरांत भारत में भी लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देगी। परंतु युद्धोपरान्त भारत में रॉलेट अधिनियम, जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड जैसी घटनाओं को अंजाम देकर भारतीयों के लोकतांत्रिक मूल्यों की अवहेलना की गई। फलतः रुष्ट होकर इन लोगों ने असहयोग आंदोलन को अंजाम दिया।

⇒ लखनऊ में 1919 में इब्राहिम हारून जफर की अध्यक्षता में एक सम्मेलन आयोजित किया जाता है, इसमें 'अखिल भारतीय खिलाफत समिति' का गठन किया गया।

अध्यक्ष – सेठ छोटानी (बम्बई)
सदस्य – ① मौलाना अबुल कलाम आजाद
② हकीम अजमल खां
③ हसरत मोहानी
④ अली बंधु (मौलाना मु॰ अली तथा शौकत अली)

उद्देश्य – तुर्की के साम्राज्य के बंटवारे के विरुद्ध एवं खलीफा के पक्ष में आंदोलन करना था।
पहला सम्मेलन – 23 नवम्बर 1919 (दिल्ली) → अध्यक्ष – फज्लुलहक

Digvijay Sir GS

अगले दिन के सम्मेलन की अध्यक्षता गांधी जी ने की। उन्होंनें यह सुझाव दिया कि ब्रिटिश अन्याय का उत्तर असहयोग आंदोलन से दिया जाएगा।

इसी अवसर पर पहली बार गांधी जी ने 'असहयोग' शब्द का प्रयोग किया था।

28 जुलाई 1920 को गांधी जी ने इस बात की घोषणा की कि असहयोग आंदोलन 1 अगस्त 1920 को उपवास प्रार्थना के साथ प्रारंभ किया जायेगा परंतु, इस दिन यह आंदोलन प्रारंभ हो पाता, इसके पूर्व ही बाल गंगाधर तिलक की बम्बई में इसी दिन मृत्यु हो गयी। यद्यपि यह शोक का विषय था, लेकिन आंदोलन फिर भी प्रारम्भ हुआ। अपनी मृत्यु से पूर्व तिलक ने भी इस आंदोलन को अपना समर्थन दे दिया था।

तिलक की मृत्यु से सम्बंधित तथ्य -

- मृत्यु - असहयोग आंदोलन के प्रारम्भ वाले दिन (1 अगस्त 1920 सुबह)
- अर्थी को कंधा दिया - महात्मा गांधी, सैफुद्दीन किचलू, शौकत अली।
- अंतिम संस्कार - बम्बई की चौपाटी

Statement

- महात्मा गांधी - मेरा सबसे प्रबल सहारा मुझसे छूट गया। वह जो मनुष्यों का सिरमौर था, नहीं रहा, सिंह गर्जना अब समाप्त हो गई। आने वाली असंख्य पीढ़ियां उन्हें 'आधुनिक भारत के निर्माता' के रूप में याद रखेगी।
- जिन्ना - तिलक एक चतुर व्यावहारिक राजनीतिज्ञ (smart practical politician) थे।
- जवाहर लाल नेहरू - 'भारतीय क्रांति का जनक' (तिलक)
- गांधी जी के पूर्व बाल गंगाधर तिलक ही राष्ट्रीय आंदोलन के सबसे प्रमुख नेता थे।
- इस आंदोलन की सफलता के लिए कांग्रेस का समर्थन जरूरी था, इसलिए अब कांग्रेस भी असहयोग आंदोलन को अपना समर्थन दे, गांधी जी ने इसके लिए प्रयास प्रारम्भ कर दिया।

Digvijay Sir CS

कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन -

⇒ सितंबर 1920 में कलकत्ता में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की विशेष बैठक लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में बुलाई गई।

⇒ इस सम्मेलन में गांधी जी ने स्वयं असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव पेश किया, जिसका काफी विरोध किया गया।

असहयोग आंदोलन प्रस्ताव
↓
प्रारम्भ

समर्थन	विरोध
① मोतीलाल नेहरू	① एनी बेसेंट
② याकूब हसन	② सी. आर. दास
③ एम.ए. अंसारी	③ विपिन चन्द्रपाल
④ सैफुद्दीन किचलू	④ मदनमोहन मालवीय
⑤ शौकत अली	⑤ मुहम्मद अली जिन्ना
⑥ जितेन्द्र लाल बनर्जी	

⇒ लाला लाजपतराय तटस्थ थे यद्यपि मन से वे छात्रों द्वारा शिक्षण संस्थाओं के बहिष्कार के विरूद्ध थे।

⇒ अंततः इस अधिवेशन में यह प्रस्ताव 873 (विपक्ष) के मुकाबले 1855 (पक्ष) के बहुमत से पारित हो गया।

⇒ इसको पास कराने में मोतीलाल नेहरू एवं अली बंधुओं ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

⇒ मोतीलाल नेहरू भी यद्यपि विधान परिषदों के बहिष्कार को व्यक्तिगत रूप से नापसन्द करते थे।

⇒ सी. आर. दास ने चुनावों के बहिष्कार का विरोध किया। वे स्कूलों, कॉलेजों कचहरियों का बहिष्कार भी रोकना चाहते थे, क्योंकि इसकी वैकल्पिक व्यवस्था भारत में नहीं थी।

⇒ गांधी जी की आलोचना करते हुए एनी बेसेंट ने लिखा कि 'वे एक राजनीतिज्ञ नहीं हैं, वे अस्पष्ट, स्वप्नवत, शुद्ध तथा साधारण मानव स्वभाव से विज्ञ नहीं हैं।

⇒ बेसेंट ने लिखा कि भारत आने के बाद से गांधी जी का राजनीतिक प्रभाव विनाशात्मक रहा है।

Dr Vijay SGS

⇒ बेसेंट ने ही कहा था कि - ईसाई पुरातन ग्रन्थों में एक स्थान पर लिखा गया है कि शैतान प्रकाश के देवदूत के रूप में भी उतरकर सामने आ सकता है।

⇒ इस प्रकार, बेसेंट ने गांधी जी को "शैतान" तक की संज्ञा प्रदान कर दी।

⇒ गांधी जी ने अली बंधुओं से मिलकर खिलाफत आंदोलन का जो समर्थन किया, उसे जिन्ना नापसन्द करते थे। उन्होंनें गांधी जी को यह चेतावनी दी थी कि देश की राजनीति में मजहब का दखल उचित नहीं है।

⇒ सरोजनी नायडू, जिन्ना को 'हिन्दू-मुस्लिम एकता का राजदूत' कहकर पुकारा करती थीं।

⇒ गांधी जी के असहयोग कार्यक्रम पर एक भिन्न विचार रवीन्द्रनाथ टैगोर का भी था, जिन्हें गांधी जी ने 'भारत का महान प्रहरी' कहकर पुकारा था।

⇒ टैगोर ने असहयोग आंदोलन के दौरान विदेशी वस्त्रों की होली जलाए जाने को 'निष्ठुर बर्बादी' कहकर पुकारा। वास्तव में असहयोग आंदोलन को वे 'भौतिक व मानसिक निरंकुशता' के खतरे के रूप में देखते थे।

नागपुर कांग्रेस अधिवेशन - 1920

⇒ कलकत्ता अधिवेशन में, जहाँ गांधी जी ने असहयोग आंदोलन से संबंधित प्रस्ताव को रखा था, वहीं दिसम्बर 1920 में कांग्रेस के नागपुर वार्षिक अधिवेशन (अध्यक्ष - सी. विजय राघवाचारी) में सी. आर. दास ने असहयोग आंदोलन से संबंधित प्रस्ताव को रखा जिन्होंने कलकत्ता कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में इसका विरोध किया था। इस प्रस्ताव को पारित कर दिया गया।

⇒ दरअसल सी. आर. दास ने चुनाव के बहिष्कार मुद्दे को लेकर जो अपनी नाराजगी जाहिर की थी, नवम्बर 1920 में चुनाव के सम्पन्न हो जाने के साथ ही खत्म हो गया था।

⇒ इसलिए उन्होंने ही इस अधिवेशन में असहयोग से सम्बंधित प्रस्ताव को रखा। कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में समर्थन मिलने के बाद यह आंदोलन अपना तीव्र रूख प्राप्त कर लिया।

⇒ असहयोग आंदोलन के दो कार्यक्रम निर्धारित किए गए थे - सकारात्मक और नकारात्मक।

रचनात्मक कार्यक्रम

⇒ सकारात्मक कार्यक्रम - हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा, अस्पृश्यता उन्मूलन का प्रयास करना, चरखा बांटना, सूत कातना, नशा उन्मूलन, ग्राम पंचायतों की स्थापना आदि कार्यक्रम शामिल थे। इसे 'रचनात्मक कार्यक्रम' को कहकर पुकारा गया।

⇒ नकारात्मक कार्यक्रम – उपाधियों को लौटाना, चुनाव का बहिष्कार करना, सरकारी नौकरी से इस्तीफा देना, और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार।

⇒ तिलक की मृत्यु के दिन ही गांधी जी ने 'कैसरे हिंद' की उपाधि लौटाकर आंदोलन की शुरूआत कर दी।

⇒ जमनालाल बजाज ने भी 'नवाब बहादुर' की उपाधि लौटा दी।

आंदोलन की प्रगति –

⇒ इस आंदोलन के दौरान स्वदेशी शिक्षण संस्थाओं की स्थापना पर बल दिया गया। इस हेतु कई राष्ट्रीय संस्थाएं खोली गईं, जैसे – गुजरात विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, बनारस विद्यापीठ व तिलक विद्यापीठ आदि।

⇒ हजारों वकीलों ने वकालत छोड़ दी। इनमें चितरंजन दास, पंडित मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, लाला लाजपत राय, वल्लभभाई पटेल, विट्ठलभाई पटेल, सी. राजगोपालाचारी, सत्यमूर्ति आदि उल्लेखनीय हैं।

⇒ जमनालाल बजाज ने इस बात की घोषणा की कि कचहरी का बहिष्कार करने वाले वकीलों को वे एक लाख रूपये सलाना खर्चे के लिए देंगे।

⇒ इसी प्रकार नवम्बर 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स के भी भारत आगमन पर कांग्रेस ने इसका विरोध करने का निर्णय लिया। कांग्रेस ने अपने अनुयायियों को उनके स्वागत समारोहों में भाग न लेने के आदेश दिए।

⇒ खिलाफत का मुद्दा भी जुड़ जाने के कारण इस आंदोलन के दौरान हिंदू मुस्लिम एकता का अभूतपूर्व प्रदर्शन हुआ।

⇒ इस आंदोलन के दौरान अली बंधुओं ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

⇒ सितम्बर 1921 में मुहम्मद अली को गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ्तारी इसलिए हुई थी, क्योंकि इन्होंने मुसलमानों को अंग्रेजी सेना में भर्ती होने से रोका था।

⇒ उनके बड़े भाई शौकत अली को भी शीघ्र ही इसी आरोप में बंदी बना लिया गया।

⇒ पंजाब के सिक्खों ने राष्ट्रीय एकता का प्रदर्शन करते हुए वहां के एक लोकप्रिय मुस्लिम नेता सैफुद्दीन किचलू को अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की चाभियां सौंप दी।

⇒ दिल्ली के एक आर्यसमाजी नेता स्वामी श्रद्धानंद को वहां के जामा मस्जिद से भाषण देने के लिए आमंत्रित किया।

⇒ इसी आंदोलन के दौरान गांधी जी ने आजीवन लंगोट धारण करने का निर्णय लिया।

Digvijay GS

इसी आंदोलन के दौरान गांधी जी ने कहा था कि यदि आंदोलन सर्वथा अहिंसक रहा, तो एक वर्ष में स्वराज्य की प्राप्ति होगी।

इस आंदोलन के दौरान सर्वप्रथम पुरूषों में मोहम्मद अली को जबकि महिलाओं में चितरंजन दास की पत्नी बसंती देवी को गिरफ्तार किया गया

चौरी - चौरा कांड -

1 फरवरी 1922 को गांधी जी ने इसकी स्पष्ट घोषणा कर दी कि यदि एक सप्ताह के भीतर ब्रिटिश सरकार ने हमारे स्वराज्य की मांग को पूरी नहीं की, तो बंबई महाप्रांत के सूरत जिले के गांव बारदोली में सामूहिक सविनय अवज्ञा आंदोलन अथवा 'कर न दो, लगान न दो' का आंदोलन प्रारम्भ कर दिया जाएगा।

परन्तु इस पर कोई कार्यवाही हो पाती इससे पहले ही उ० प्र० के गोरखपुर जिले के चौरी - चौरा नामक स्थान पर 4 फरवरी 1922 को असहयोग आंदोलनकारियों के एक क्रुद्ध भीड़ ने एक पुलिस चौकी में आग लगा दी जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गए। इसे 'चौरी - चौरा कांड' के नाम से जाना जाता है।

8 फरवरी 1922 को बारदोली में इस घटना की जानकारी गांधी जी को छोटे पुत्र देवदास ने दी।

गांधी जी ने तब बारदोली प्रस्ताव के अंतर्गत 12 फरवरी 1922 को आंदोलन वापस ले लिया।

गांधी जी के द्वारा इस आंदोलन को वापस ले लिए जाने की कड़ी आलोचना उस समय के कई महत्वपूर्ण नेताओं ने की।

मोतीलाल नेहरू ने कहा था - "यदि कन्याकुमारी के किसी गांव ने कोई अपराध किया है, तो उसकी सजा हिमालय के किसी निर्दोष गांव को क्यों दी जाए?"

सुभाषचन्द्र बोस ने अपनी पुस्तक 'इंडियन स्ट्रगल' में लिखा है - 'एक ऐसे समय में आंदोलन को वापस लिया जाना, जबकि वह अपने चरमोत्कर्ष पर था, राष्ट्रीय दुर्भाग्य से कुछ कम नहीं था।'

रजनीपाम दत्त ने कहा - 'खोदा पहाड़ निकली चुहिया।'

अब्दुल कलाम आजाद ने असहयोग आंदोलन को वापस लेने को एक 'महान भूल' की संज्ञा दी, जिससे जोश तथा मनोबल ठंडे पड़ गए।

⇒ डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा - "साधारण जनता में जैसे एक मुर्दनी सी दिखाई देने लगी, मानो दौड़ता हुआ मनुष्य ठेस लग जाने से गिर पड़ा हो

बारदोली प्रस्ताव पर निंदा प्रस्ताव

1. ⇒ असहयोग आंदोलन बारदोली प्रस्ताव के अंतर्गत समाप्त हुआ। बारदोली में ही यह निश्चय कर दिया गया कि अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक शीघ्र की जाए।

2. ⇒ तिथि निश्चित करके दिल्ली में बैठक की घोषणा कर दी गई। इसी बैठक में बारदोली के निश्चय पर विचार होने थे।

3. ⇒ 24 फरवरी 1922 को आयोजित दिल्ली की इस बैठक की अध्यक्षता हकीम अजमल खां ने की, जो उस समय कांग्रेस के अध्यक्ष थे।

4. ⇒ गांधी जी ने बारदोली के निश्चय एवं समर्थन पर एक प्रस्ताव रखा।

⇒ इस पर डॉ॰ मुंजे ने गांधी जी के निश्चय पर अविश्वास प्रकट करने वाला प्रस्ताव रखा, जिसमें कहा गया कि एक समिति बनाई जाए, जो असहयोग के कार्यक्रम एवं उसके अनुसार होने वाले प्रत्येक कार्य की जांच करें एवं देश को उचित परामर्श दें।

⇒ इसी समय अजमल खां की तबियत खराब हो गई और उन्होंनें गांधीजी को अपने स्थान पर सभापति बना दिया।

⇒ अविश्वास का प्रस्ताव अंततः बहुमत से अस्वीकार कर दिया।

गांधी जी की गिरफ्तारी -

⇒ 10 मार्च 1922 की शाम को गांधी जी अपने आश्रम में गिरफ्तार कर लिए गए।

⇒ अहमदाबाद के जिला एवं सेशन जज श्री ब्लूमफील्ड की अदालत में उनका मुकदमा 18 मार्च को पेश हुआ।

⇒ गांधी जी एवं उनकी पत्रिका के मुद्रक श्री एस॰ जी॰ बैंकर पर 'यंग इंडिया' में राजद्रोह को प्रेरित करने वाले तीन लेख लिखने व प्रकाशित करने का आरोप लगाया गया।

⇒ गांधी जी को 6 वर्षों के सामान्य कारावास का दंड सुनाया।

⇒ गांधी जी को 20 मार्च 1922 से 12 फरवरी 1924 तक यरवदा जेल में काल कोठरी में रखा गया।

⇒ फरवरी 1924 को उन्हें एपेंडिसाइटिस का ऑपरेशन होने के बाद छोड़ दिया गया।

माध्यम से सरकार के साथ समझौता करने की कोशिश की, लेकिन वायसराय इरविन ने इस बार भी कोई ध्यान नहीं दिया। तब गांधी जी ने कहा था – "मैंने घुटने टेककर रोटी मांगी, परंतु पत्थर मिला, अब यह दांडी मार्च प्रारंभ होता है।"

दांडी मार्च -

⇒ गांधीजी ने 12 मार्च 1930 को गुजरात के अहमदाबाद जिले में स्थित साबरमती आश्रम से अपने चुने हुए 78 सहयोगियों के साथ नौसारी जिले में स्थित दांडी तक एक मार्च प्रारम्भ किया, जिसे 'दांडी मार्च' कहकर पुकारा गया।

⇒ उसमें सर्वाधिक 31 लोग गुजरात से और इसके बाद 13 लोग महाराष्ट्र से आने थे। उ० प्र० से 8 लोग आने थे।

⇒ नेपाल से महावीर और सिंधु क्षेत्र से आनंद हिंगोरानी ने भाग लिया था।

⇒ इस मार्च में दो मुसलमान और एक ईसाई भी शामिल थे। इसमें महिलाओं एवं बच्चों का कोई नाम नहीं था।

⇒ सत्याग्रहियों की सूची में एक नाम अब्बास तैय्यब जी का था, जिन्हें गांधी जी की गिरफ्तारी की स्थिति में दांडी मार्च का नेतृत्व करना था।

⇒ गांधी जी ने उस प्रतिज्ञा का मसौदा स्वयं बनाया, जो सत्याग्रह में भाग लेने वाले हर स्वयंसेवक को लेनी थी।

⇒ इस मार्च की तुलना सुभाषचंद्र बोस ने 'मुसोलिनी के रोम मार्च और नेपोलियन के पेरिस मार्च' से की है।

⇒ जवाहरलाल नेहरू ने कहा – "आज यह तीर्थयात्री अपनी दीर्घयात्रा के लिए निकल पड़ा है।"

⇒ साबरमती आश्रम से दांडी तक की दूरी 385 किमी॰ या 241 मील थी।

⇒ यह पूर्णरूपेण एक पैदल मार्च होनी थी।

⇒ इस मार्च को प्रारंभ किए जाने के पूर्व ही सत्याग्रहियों का एक जत्था गांधी के साबरमती आश्रम से सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में निकल चुका था, जिनका कार्य मार्ग में पड़ने वाले लोगों को लड़ाई के लिए तैयार करना था। परंतु 7 मार्च 1930 को पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

Digvijay Sir GS